IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, February 2026
Impact Factor: 8.2

c?ky[k.M e 1857 dh Økfr vkj Økfrdkfj;k dk ,frgkfld ifjn';

Mk- tuUn dekj feJ
सहायक प्राध्यापक इतिहास, श्रीयुत महाविद्यालय गंगेव, रीवा (म.प्र.)

xgpUn iVy
शोधार्थी इतिहास, अ.प्र.सिंह वि.वि. रीवा (म.प्र.)

'kk/k lkjk'k &

भारतीय राजनीति में एक नए युग की शुरूआत मुगल साम्राज्य के पराभव तथा कंपनी हुकूमत के प्रभावशील होने के साथ हुई। यह वह दौर था जब जनमानस में चेतना का नव अंकुरण हो रहा था और आम जनता अपने हक, अधिकार तथा शोषण उत्पीड़न से बचने के लिए किसी नए मिथकीय प्रयोग की ओर अग्रसर थी। जन वैचारिकी और पूर्व शासकों के कार्य व्यवहार का गहराई से अध्ययन करते हुए ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय राजनीति में प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष दखलअंदाजी शुरू की। जिन क्षेत्रों में पूर्व संचालित सामंतों, शासकों, इलाकेदारों और मुगल मनसबदारों का उत्पीड़न प्रभावी था वहां कंपनी के नुमाइंदों ने चतुराई पूर्ण दखलअंदाजी करते हुए धीरे–धीरे व्यापार की जगह स्थानीय सत्ता को अपने प्रभाव में लेने लगे। जब उनका निहितार्थ प्रभावी होने लगा तो जनमानस उनकी नीतियों को स्वीकार नहीं कर पाई और उपभोक्तावादी षडयंत्रों को नकारते हुए क्रांति का आह्वान किया। जिसका मुखर प्रभाव 1857 की क्रांति में दिखा जब प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का आगाज संपूर्ण भारत में हुआ। इस उत्तेजक और क्रांतिकारी दौर में बघेलखंड की नव शक्ति भी मुखरित हुई और ब्रिटिश हुकूमत के नीतियों का परिपालन करने वाली कंपनी सरकार के विरुद्ध कुंवर सिंह, श्यामशाह, रणमत सिंह, रणजीत राय जैसे विद्रोही चिंतकों ने स्वतंत्रता क्रांति का बिगुल बजाया जिससे बघेलखंड में नवजागरण की क्रांति आयी और विजयराघवगढ़, नौगांव, नागौद, क्योंटी जगहों आदि क्षेत्रों में अंग्रेजों के खिलाफ संघर्षपूर्ण युद्ध शुरू हुआ जिसमें अधिकतर स्थानों पर कंपनी हुकूमत पर बघेलखंड के क्रांतिकारी भारी पड़े। यह दौर रीवा राज्य के महाराज रघुराज सिंह के शासनकाल का था जो सहृदय साहित्य प्रेमी और धर्मप्रिय महाराजा थे। उन्होंने क्रांतिकारियों के साथ सहानुभूति बरतते हुए कंपनी हुकूमत के साथ हर संभव सामंजस्य बनाने का प्रयास किया।

'kCn cht &बघेलखण्ड, शासनकाल, हुकूमत, नवजागरण, जनक्रांति, क्रांतिकारी, राजनीति, संघर्षपूर्ण, परिदृश्य, स्वतंत्रता का बिगुल आदि।

iLrkouk &

बघेलखण्ड के राजनैतिक परिदृश्य में तात्कालिक केन्द्रीय सत्ता का प्रभाव महाराजा रघुराज सिंह के शासनकाल में प्रभावित तरीके से दिखा। महाराजा रघुराज सिंह के पूर्व उनके पिता महाराज विश्वनाथ सिंह के शासनकाल में रीवा राज्य की प्रशासन व्यवस्था तात्कालिक ब्रिटिश शासन के प्रभाव से लगभग मुक्त रही। ब्रिटिश हुकूमत की दृष्टि वन सम्पदा एवं खनिज संसाधन से परिपूर्ण रीवा राज्य के विविध राजस्व क्षेत्रों में थी परन्तु सीधे प्रभाव इतना होने के कारण इस क्षेत्र से ब्रिटिश हुकूमत का आंशिक प्रभाव ही रहा।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

जिस कारण महाराज विश्वनाथ सिंह अपनी विशेष कार्यशैली से राज्य के आंतरिक प्रशासन को सहजता से दूरदर्शिता के साथ संचालित करते रहे।

महाराज विश्वनाथ सिंह ने अपने राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों में अपना प्रभाव जमाते हुए स्थानीय इलाकेदारों पर सहजता से नियंत्रण बना लिया। जनमानस के नजरों में उदारचेता, धार्मिक कार्यों में संलग्न साहित्य प्रेमी महाराज विश्वनाथ सिंह ने बड़ी कुशलता के साथ प्रतापजीत के विरुद्ध अभियान चलाकर त्योंथर इलाके को अपने राज्य में शामिल किया। इसी के साथ उन्होंने असंतोष और विद्रोह के पर्याय बने, नईगढ़ी के सेंगरों पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। इसी चरण में उन्होंने रामनगर के राजा भावसिंह तथा सेमरिया के बघेलों को राज्य रीवा दरबार में हाजिर होने के लिये विवश किया।

अगले चरण में उन्होंने सीधी जिला के वर्दी के शासक अजीत सिंह तथा भवानी सिंह के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए उनका राजस्व क्षेत्र राजसात किया। जिरउहां के बघेल शासक जनद देव के साथ ही बांधवगढ़ के अंगत सिंह और क्षेत्र को अपने अधीन करते हुए सेंगर सेनाओं को रीवा राज्य में शामिल होने के लिये विवश किया। महाराज विश्वनाथ सिंह का सबसे प्रभावशाली कार्य मऊ (गंज) और मिर्जापुर के मध्य के सीमा विवाद का समाधान किया जिसमें उन्होंने पहली बार कम्पनी सरकार की ओर से नियुक्ति इस्ट वर्ल्ड को रीवा राज्य के आंतरिक प्रशासन में अभिरुचि दिखाने को मना किया।

बघेलखण्ड के राजनैतिक परिदृश्य में नया अध्याय 1857 में स्वतंत्रता संग्राम के साथ प्रारंभ हुआ। यह दौर था जब महाराजा रघुराज सिंह तीर्थयात्रा पर जगन्नाथ भगवान के दर्शन के लिए जगन्नाथपुरी गये थे। उसी समय बैरकपुर छावनी में मंगल पाण्डेय ने ब्रिटिश हुकूमत के निर्देशों को अस्वीकार कर कम्पनी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह का विगुल फूका जिसका प्रभाव सम्पूर्ण उत्तर भारत में देखते हुए तत्कालीन ब्रिटिश हुकूमत में विभिन्न प्रयास किए। इसी क्रम में मध्य क्षेत्र की बघेल सरकार को विद्रोह से दूर रखने और स्थानीय गतिविधियों में नियंत्रण के लिए तत्कालीन वायसराय ने आसबर्न को रीवा का पोलिटिकल एजेण्ट नियुक्त कर किया।

बघेलखण्ड अचंल की गतिविधियों के नियंत्रित करने के लिए तत्कालीन गवर्नर जनरल कैनिंग ने आसबर्न के हाथों एक पत्र महाराजा रघुराजसिंह को भेजा। रहमान अली ने उक्त पत्र का उल्लेख इस प्रकार किया है– "जनाब मोअल्ला अल्काब लार्ड कैनिंग साहेब बहादुर गवर्नर जनरल बनाम महाराजा रघुराजसिंह साहेब बहादुर बाद अल्काव मामूली निगहबानी अहदनामा के शर्तों की और खालिस खैरअन्देशी (शुभचिन्तन) निसवत सरकार इंगलिशिया की ओर आपकी कोशिश दर्बाव न जाहिर होने फसाद के जो कुछ इस वक्त आपकी तरफ से जाहिर हुई, बेशक मौजिक इजदेयाद (पकाते) खुशी और एहसान मन्दी हमारे के हुई। आपको विश्वास दिलाया जाता है कि इस तरह की नेकनीयती और आफसानी आपकी नहीं भूलेगी और यह भी आपको सूचना दी जाती है कि इन दिनों बराये चन्दे एक सहाब मोअज्जिज का पद पोलिटिकल एजेण्टी राज रीवा पर मोकर्रर होना मुनासिब मुतसौवर होकर लेप्टिनेंट डब्ल्यू. डब्ल्यू. आसबर्न साहेब बहादुर जो अपने नेक अतावरी से हर तरह महल एतमाद दोस्तदार के हैं, इस पद पर नियुक्त किये गये हैं। आपसे आशा है कि साहब मौसूफ की सरकार दौलतमदार की ओर से अपने रियासत का पोलिटिकल एजेण्ट ख्याल फरमाकर वह इज्जत किलायक इस पद के हैं साहब मौसूफ के सम्बन्ध में मतनहूज रखेंगें और साहब मौसूफ भी मदारिज इत्तेहाज और सफाई खातिर दोस्तदार और मरातिब खुशी के निस्बत आपको जाहिर किया करेंगे। उम्मीद है कि दोस्तदार को अपने मिजाज का खैरियत ख्वाह तसौवरफर्माकर इत्तिलादेही उसके से शादगी करते रहेंगे।

कम्पनी हुकूमत के खिलाफ बघेलखण्ड में विद्रोह का श्रीगणेश जगदीशपुर (बिहार) के कुंवरसिंह के रीवा आगमन से हुआ। कुंवरसिंह के रीवा पहुँचने और कम्पनी हुकूमत के खिलाफ अभियान का मसौदा तय करने के फलस्वरूप ही रणमतसिंह का उदय हुआ। रीवा महाराजा रघुराजसिंह को जब कुंवरसिंह के रीवा आने का समाचार मिला तो उन्होंने कुँवर सिंह के साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार किया,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

वे नहीं चाहते थे कि अंग्रेजों को उनके विद्रोहियों से मिले होने का सन्देह हो। इस संदर्भ में उन्होंने रीवा से 8 मील दूर थे, तब उन्हें पत्र लिखकर रीवा न आने की राय दी।

इस संदर्भ रहमान अली लिखते हैं कि ''11 अगस्त 1857 को हारौल ईश्वरजीतसिंह (तेंदुन निवासी), मऊगंज के तहसीलदार ने सुना कि बागी कुंवरसिंह अपने रिश्तेदार डुमरांव (बिहार) से किसी उद्देश्य से रीवा आया है, तत्काल ईश्वरजीत सिंह ने सिपाहियों की सहायता से तहसील व सेवाइक बमकाम कटरा घाट में उस पर धावा बोल दिया। कुंवर सिंह मुकाबला न कर सका और बिना विरोध किए पहाड़ के नीचे से बांदा की ओर चला गया। 1857 में बांदा जाते समय वह डभौरा गया, जहां पर रीवा महाराजा का पवाईदार रनजीतराय दीक्षित बांदा के विद्रोहियां को शरण दे रहा था। कुंवरसिंह ने सहसराम और रोहतास के असन्तुष्ट पठानों को अंग्रेजों के विरुद्ध भड़काकर रीवा की ओर आगे बढ़ने का निश्चय किया।'' इस अभियान में कुंवरसिंह सफल भी रहें।

कुंवरसिंह के रीवा आने पर 1857 की क्रान्ति का असर यहां पर भी प्रभावी होने लगा। जिसका मुखर स्वरूप अगस्त 1857 में तिलंगा ब्राह्मण में दिखेगा। दक्षिण भारत का निवासी तिलंगा अंग्रेजी फौज का एक साधारण सैनिक था जिसने कम्पनी निर्देशों के खिलाफ जनमानस को जागृत किया। उसके कार्य में असंतुष्ट पोलिटिकल एजेण्ट आसबर्न ने उसे बड़ी चतुराई से गिरफ्तार करवा लिया, इसलिए उसने यह अफवाह भी फैला दी, कि उसे शीघ्र फांसी दी जायेगी। अतः श्यामसिंह, रणमतसिंह, धीरसिंह और पंजाबसिंह ने सलाह की कि तिलंगा को किस प्रकार बचाया जाये। आसबर्न को इन सरदारों के षडयन्त्र की भनक लग गई तब उन्होंने महाराजा रघुराजसिंह को इनके बागी होने की जानकारी भेजी इस पर महाराजा ने स्वयं को अंग्रेजों के सन्देह से बचने के लिए नामित सरदारों को नौकरी से निकाल दिया। जिसका व्यापक प्रभाव स्थानीय स्तर पर पड़ा और प्रतिक्रिया में अंग्रेजों के दमन करने की मुहिम बघेलखण्ड में शुरू हुई। जिसमें चिंहित चारों सपूतों ने अपने साथियों सहित अंग्रेजों के विरुद्ध मुखर विद्रोह प्रारंभ किया।

विद्रोह का नेतृत्व प्रथम श्यामशाह ने मुखरता के साथ किया। 1822–23 में खम्हरिया में जन्मे श्यामशाह संस्कृत के विद्वान थे। अध्ययन के साथ–साथ उन्होंने क्षत्रियोचित अश्वारोहण, कुश्ती, शस्त्रास्त्र चालन का अच्छा अभ्यास किया था। थोड़े से सैनिकों को लेकर विशाल सेना के दांत खट्टे करने में वे माहिर थे। श्यामशाह की पत्नी रणमतसिंह की फुफेरी बहन थी और वह रणमतसिंह को दादा कहती थी। इस कारण रणमतसिंह प्रायः खम्हरियां रणमत सिंह जाते थे। कम्पनी पोलिटिकल एजेंट ने श्यामशाह की गिरप्तारी के लिए दो हजार रूपयों का इनाम रखा गया था।

देवरा और बुड़वा के जमींदार श्यामशाह के कर्जदार थे ने श्यामशाह को मारने की योजना बना पुरुस्कृत होने के लिए एकांत में श्यामशाह की गोली मारकर घायल कर दिया जिससे उनकी मृत्यु हो गयी। इस पर बुड़वा के ठाकुर गुरुदत्तसिंह को दो हजार रूपयों के पुरस्कार के साथ बुड़वा जागीर को कर मुक्त कर दिया गया। इस संदर्भ में महाराजा रघुराजसिंह की ओर से एक पाट जारी किया गया– ''सिधि श्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा श्री राजा बहादुर श्री कृष्णचंद्र के पात्राधिकारी रघुराज सिंह जूदेव नामदीन चचाई के श्रीमहाराज कुमार श्री लाल गुरूदत्त सिंह देव का श्यामशाहं वागी का मारिन तौने के बढि चचाई का मामला माफ कै दीन औ एक सवार कैचा करी कै दीन घोड़ लुरकी लाजी तेकर साल कै दीन रूपि या चारि सै सरकार रौस सो पाएं जाइ सेवा स्वामित मा हाजिर रहै देसविदेस गैरहाजिर कटि जाइ जबते हाजिरी देइ तबते सही होइ लेकर पाट लिष दीन'' कुवार सुदि 10 का सं. 1915।

कसौटा के जगतराय को कोठी का इलाका मिला था। जगतराय के तीन पुत्र थे– अंगतराय, भारतशाह और चतरशाह। इनमें से भारतशाह को मनकहरी का इलाका प्राप्त हुआ, जिसमें रणमत सिंह हुए। रणमत सिंह का जन्म 1825 ई. को हुआ था, जिसकी पुष्टि 1854 ई. में महाराजा रघुराज की दशहरा यात्रा के अवसर पर निकली सवारी से होती है। इस अवसर पर रणमत सिंह महाराजा के अंगरक्षक के रूप में खड़े हैं। रणमत सिंह की माता गड़री (जिला सतना) की चन्देलवंशी कन्या थी। बचपन से ही रणमत सिंह में

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

साहस और शौर्य के लक्षण प्रकट होने लगे थे। बचपन से ही इन्हें मल्लविद्या और घुड़सवारी का शौक था। मल्लयुद्ध के अतिरिक्त उन्होंने तलवार, बरछी, कटार आदि चलाने में महारात हासिल कर ली थी।

1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम की लहर मेरठ और दिल्ली से होती हुई बघेलखण्ड तक पहुंच गई थी। उसने रीवा राज्य के चारों तरफ विद्रोह की विकट ज्वाला का रूपधारण कर लिया था। श्यामशाह षडयन्त्रपूर्वक मारे जा चुके थे। श्यामशाह की मृत्यु के बाद बघेलखण्ड में विद्रोह की बागडोर रणमत सिंह ने संभाली। उनके साथ बघेल, परिवार, सोमवंशी, परमार, चन्देल राजपूतों के अतिरिक्त रीवा के घोघर के मुसलमानों का भी एक जत्था था, जिसमें 300 आदमी सम्मिलित थे। उनके साथियों में प्रमुख रूप से धीरसिंह, पंजाब सिंह, रामप्रताप सिंह, भवानी सिंह, पहलवान सिंह चन्देल, लोचन सिंह, प्रतिपाल सिंह, अनन्त सिंह, भोला बारी, कामता लोहार, वृन्दावन कहार, तालिबबेग, गोपाल, मुसलमान और सहामत खां थे।

सहामत खां ने रणमतसिंह का मृत्यु पर्यन्त साथ दिया। ये दोनों लंगोटिया यार थे। अतः रणमत सिंह जहां जाते सहामत खां को अवश्य अपने साथ ले जाते थे। अन्य दो बघेल सरदार धीरसिंह और पंजाब सिंह थे। धीरसिंह कछियाटोला (कृपालपुर, सतना) बरगढ़ में सरकारी सेना से पराजित होकर लापता हो गये। पंजाब सिंह साकिन मझियार (रीवा सिरमौर मार्ग पर रीवा से 10 मील) इजला अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार होकर बांदा जिला भेजा गया। करूई (कर्वी) में तहकीकात के बाद छूटकर वह अपने घर आया। विद्रोह के समय रीवा राजा और सोहागपुर के बीच के अप्रत्यक्ष सम्बन्ध का ज्ञान एक पत्र से ज्ञात होता है। नवम्बर 1857 में धीरसिंह सोहागपुर के विद्रोह में कार्यरत था।

1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में महाराजा रीवा की दोहरी भूमिका थी। खुले रूप में वे अंग्रेजों के समर्थक थे और अन्दर ही अन्दर विद्रोहियों की मदद कर रहे थे। पोलिटिकल एजेण्ट आसबर्न के कहने पर रीवा राजा ने चार बघेल सरदारों को सेवा मुक्त कर राज्य छोड़ने का आदेश तो दे दिया, किन्तु कड़ाई से उसका पालन नहीं किया। अतः सभी सरदार रीवा में रहकर अंग्रेज विरोधी गतिविधियों में लिप्त रहे और उन्होंने रीवा स्थित आसबर्न के घर को घेर लिया। आसबर्न किसी प्रकार अपने प्राण बचाकर वहां से निकलने में सफल हुआ। अगस्त–सितम्बर 1857 में विद्रोह ने उग्ररूप धारण कर लिया। जिसे नियंत्रित करने के लिए 2 सितम्बर 1857 को आसबर्न के आदेशानुसार रघुराजसिंह ने कम्पनी सरकार के व्यय पर दशरथराम पाण्डेय मड़रिहा के नेतृत्व में एक फौज इलाहाबाद की ओर रवाना की। सेना का प्रमुख सेनापति कर्नल हाइण्ड को बनाया गया था। परन्तु दशरथराम पाण्डेय की कमजोरी के कारण सेना विद्रोहियों के विरुद्ध ठोस कार्यवाही करने में असमर्थ रही जिससे उसे वापस बुला लिया गया।

असंतोष और विद्रोह के इस परिवेश में अक्टूबर 1857 में विजयराघवगढ़ के सेनापति बहादुर खां की कैमूरभाण्डेर क्षेत्र में अंग्रेजों से भयंकर मुठभेड़ हुई। घमासान युद्ध में असलहों का भरपूर प्रयोग हुआ। दोनों ओर की सेनाओं ने अपनी सारी शक्ति लगा दी। समय जैसे–जैसे गुजरता गया बहादुर खां की सेना अंग्रेजी सेना पर भारी पड़ने लगी जिससे परास्त है। अंग्रेजी सेना ने घुटने टेक दिये और वह युद्ध की सामग्री छोड़कर पीछे हट गयी। अंग्रेजों के पराजय से चिंतित कम्पनी सरकार ने जबलपुर के मेजर इरेस्किन ने कर्नल ह्विसलर के नेतृत्व में नई सेना भेजी। अंग्रेजों की सेना संख्या में अधिक थी। कटनी नदी के किनारे दोनों सेनाओं मेंढ में रक्तरंजित युद्ध हुआ जिसमें पठान सरदार बहादुर खां खेत रहा। उसकी कब्र कटनी जिला अस्पताल की मेढ़ में नगरपालिका कार्यालय के पार्श्व में विद्यमान है। इसे शहीद बाबा का मजार कहते हैं।

इस क्रांतिकारी अभियान में अपनी पराजय से विजयराघवगढ़ की सेना हतोत्साहित नहीं हुई और दूने उत्साह से अपनी रणनीति बनाने लगी। विद्रोहियों के एक अन्य सेनापति ने ह्विसलर पर भीषण प्रहार कर उसे स्लीमनाबाद की ओर पलायन करने को बाध्य कर दिया। परन्तु अंग्रेजी तोपों की लगातार मार से विद्रोही विचलित हो उठे और उन्होंने आमने–सामने का युद्ध छोड़कर गोरिल्ला प्रणाली से युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। जब इस प्रकार की छिटपुट भिडन्त चल रहीं थी, तभी पन्ना के राजा ने नवाब सिंह बुन्देला और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

उसके साथ दौलतसिंह को बिलहरी भेजा, जहां से वे अपनी गतिविधियां संचालित करते थे। परन्तु सितम्बर 1857 में अंग्रेजों ने बिलहरी के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। दौलतसिंह कैमूर के जंगलों की ओर भाग गया। किन्तु एक दिन वह ज्वालामुखी पहाड़ी पर पूजा करते समय पकड़ा गया और अन्धेरी बाग में उसे फाँसी दे दी गयी।

बघेलखण्ड में दिनों–दिन उग्र हो रहे इस मुहिम को कप्तान आसबर्न के पास विद्रोहियों को दबाने का एक ही रास्ता बचा था कि रीवा राज्य भी उसकी मदद करे। अतएव इस दिशा में प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये गये। रीवा के राजा रघुराजसिंह अंग्रेजों के साथ–साथ क्रान्तिकारियों के भी सम्पर्क में थे। वे प्रत्यक्ष रूप से किसी का भी पक्ष नहीं लेना चाहते थे। इस पर कप्तान आसबर्न ने रीवा राज्य के दीवान देशबन्धु पाण्डे के माध्यम से रघुराजसिंह पर दबाव बनाना प्रारम्भ किया। दीवान देशबन्धु पाण्डे और कप्तान आसबर्न के बीच बहुत अच्छे सम्बन्ध थे, कारण दीनबन्धु को आसबर्न की ही सिफारिस पर दीवान बनाया गया था। अतएव दीनबन्धु आसबर्न को नाराज नहीं करना चाहता था।

धीरे–धीरे उसने रीवा राज्य के अनेक अधिकारियों और जागीरदारों को अपने पक्ष में कर लिया। किन्तु राजा रघुराजसिंह अब भी ऊहापोह की स्थिति में थे। रीवा शासकों के अवध के सामन्तों और राजाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध थे। अतः रीवा के निवास में भी वहां अंग्रेजों की मदद न करने के समाचार बराबर आ रहे थे। ऐसी परिस्थिति में महाराजा रघुराजसिंह असमंजस की स्थिति में थे। वे यह भी जानते थे कि अंग्रेजों की बात न मानी तो उन्हें भारी नुकसान हो सकता है। तभी दीवान दीनबन्धु पाण्डे ने उन्हें समझाया कि अंग्रेजों की सहायता करने से बुन्देलों द्वारा जीता गया मैहर राज्य पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

दीनबन्धु की कूटनीति और चतुराई काम कर गई और रघुराजसिंह अंग्रेजो की मदद करने के लिए तैयार हो गये । इस नयी योजना ने बघेलखण्ड के विद्रोही समर को एक नया मोड़ दिया अब विजयराघवगढ़ की सेनाओं को दो ओर से आक्रमण का सामना करना पड़ रहा था। अंग्रेजी सेना से वे पहले ही युद्धरत थे किन्तु इसी समय रीवा राज्य भी अपनी रणनीति बदलकर नवीन प्रयोग में जुट गया इसका प्रमुख कारण यह था कि प्रयागदास द्वारा रीवा का खितौली क्षेत्र जीतकर अपने राज्य में मिला लेना था । अतएव रीवा और नागौद के साथ अंग्रेजी सेनाओं ने मिलकर विजयराघवगढ़ पर आक्रमण कर चारों ओर से घेर लिया गया। लालसिंह दउआ ने अदभुत वीरता का परिचय दिया।

विजयराघवगढ़ के दो सेनानायक सरदार रामबोल और वन्दन चाचा दो नई तोपों रामबाण और घनगर्जन से आक्रमण कर रहे थे। वन्दन चाचा के नाम से प्रसिद्ध यह अमर सेनानी विजयराघवगढ़ सेना का एक प्रमुख वीर था। जब रीवा राज्य की सेनाओं ने कैमूर घाटी की ओर से आक्रमण किया, तब तत्काल वंदन चाचा और उनके सहयोगियों ने उन्हें रोकने का प्रयत्न किया। किन्तु सफल न हो सके। कैमूर घाटी से उतरने के पश्चात् विजयराघवगढ़ के वाहर मोर्चा संभाला और शत्रु सेना में घुसकर मुख्य सेनानी का सिरकाट कर जब अपने मोर्चे में वापस आने लगे तब उसी समय दुश्मन की गोलियों का शिकार हो गये। वन्दन चाचा का यह बलिदानी स्थल विजयराघवगढ़ बस्ती के उत्तर की ओर दीनबन्धु चौक के नाम से विख्यात है। तनावपूर्ण राजनैतिक सरगर्मियों के बीच रीवा में ''तिलंगा'' की गिरप्तारी के बाद रणमतसिंह की विद्रोही गतिविधियां मध्यभारत के उत्तरी क्षेत्र में बराबर चलती रही।

रणमतसिंह के नागौद, भिलसाय, चित्रकूट, नौगांव और क्योंटी के युद्धों से बघेलखण्ड में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक मुखर मुहिम प्रारंभ हुई। नागौद की भौगोलिक स्थिति देखकर रणमत सिंह के इस अभियान ने कम्पनी प्रयास को नये रणनीति से सोचने को विवश किया जिसके तहत वहां अपनी छावनी बना ली जिसमें सेना की दो टुकडियां रहती थी। सतना – पन्ना मार्ग के किनारे स्थित रेस्टहाउस तहसील और अदालत में तत्कालीन एजेन्सी का कार्यालय और कोषालय था। नागौद के पश्चिम में बारापत्थर गांव के पास सैनिकों की बैरक, परेड ग्राउण्ड, चांदमारी, घुड़साल और शस्त्रागार था। छावनी की कमान कर्नल के अधीन थी। नागौद की वर्तमान उपजेल का निर्माण अंग्रेजों ने कराया था।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

1857 ई. में पोलिटिकल एजेन्सी नागौद के अध्यक्ष मि. कोल मार्च 1857 ई. में इंग्लैण्ड चले गये जिससे सहायक पोलिटिकल एजेण्ट मि. एलिस को उनका पदभार दे दिया गया। इस समय नागौद छावनी में 50वीं नेटिव बटालियन की दो कम्पनी मौजूद थी। नौगांव छावनी में विद्रोह हुआ किन्तु उसे दबा दिया गया। नौगांव से आयी सूचनाओं के कारण नागौद में हलचल प्रारम्भ हो गई। अंग्रेज सतर्क हो गये। नागौद में छाया सन्नाठा किसी आगामी प्रतिकारकों सूचक था। इसी दिन नौगांव छावनी के बारह इन्फेण्ट्री तथा 14 केवलरी के आठ सिपाही सेकेण्ड लेप्टिनेण्ट टाउनसेण्ड, सार्जेण्ट रापट, नायक कुंडिया, बिगुलची रोट्रिक और तीन अफसर भागकर नागौद आये। इसका प्रमुख कारण सैनिकों का विद्रोह था जिसमें मेजर किर्के की हत्या कर दी गई थी।

नौगांव के विद्रोही छतरपुर होते हुए नागौद आये। नागौद एजेन्सी को सूचना मिली कि बांदा का नवाब सेना सहित नागौद की ओर बढ़ रहा है। उसे रोकने के लिए नागौद छावनी की डेढ़ कम्पनी कालिंजर की ओर भेजी गई। नागौद छावनी में दीनापुर छावनी से आये सूबेदार भवानीसिंह को विद्रोह करने की आशंका में बन्दी बना लिया गया। इसी क्रम में नागौद छावनी में 50वीं इन्फैण्टी के सूबेदार शिवलाल तिवारी और चार अन्य सैनिक बगावत फैलाने के आरोप में पकड़े गये। उन्हें नागौद जेल भेज दिया गया। मेजर एलिस इन विद्रोहियों को जबलपुर भेजने की मंशा थी परन्तु अंग्रेज सैनिक पर्याप्त मात्रा में न होने के कारण ऐसा न हो सका। इसी बीच 60 कैदी नागौद जेल तोड़कर बाहर आ गये।

जबलपुर कमिश्नर डब्ल्यू. सी. अर्सकिन ने भारत सरकार के होम डिपार्टमेन्ट को इस घटना की सूचना देते हुए लिखा कि ''28 जून को नागौद जेल से 60 कैदी बाहर आ गये हैं। उन्होंने अधिकारियों के घरों पर धावा बोला और आग लगाने का प्रयत्न किया। नागौद में विद्यमान 50वीं बटालियन के सैनिकों और पुलिस के जवानों ने उनको पकड़ना प्रारम्भ कर दिया।'' भगोड़े विद्रोहियों को आशा थी कि सैनिक और पुलिस उनका साथ देगी, किन्तु निराशा ही उनके हाथ लगी। सैनिकों और पुलिस ने उन पर गोलियाँ चलाई। चौदह भगोड़े मारे गये, 39 पकड़े लिये गये और 8 फरार हो गये। फरार कैदियों को पकड़ने अथवा मारने के लिए पांच सौ रुपयों का पारितोषिक घोषित किया गया।

विद्रोह की यह बयार धीरे–धीरे तीव्र होती गई। नागौद से 20 कि. मी. की दूर पर नागौद सलेहा मार्ग पर जसो का इलाका था। पहले यह अजयगढ़ के अधीन था। कालान्तर में स्वतन्त्र हो गया। 1832 ई. में जसो के राजपरिवार में आपसी मनमुटाव हो गया। जसो के जागीरदार ईश्वरीसिंह ने अपने सम्बन्धियों से रीछुल और दुरेहा गाँव वापस लेकर जसो में विलय कर लिया। 1832 ई. में यह विवाद बुन्देलखण्ड के पोलिटिकल एजेण्ट के समक्ष प्रस्तुत किया गया। निर्णय के अनुसार जसो से रीछुल ग्राम वापस ले लिया गया और दुरेहा गांव के बदले में जसो को एक हजार रूपया भत्ता के रूप में देने को कहा गया। जसो के जागीरदार ईश्वरीसिंह को यह निर्णय रूचिकर न लगा, जिससे वे अंग्रेजों के विरुद्ध हो गये और उन्होंने कोनी के होरिलसिंह के द्वारा रणमतसिंह को नागौद आने का निमन्त्रण दिया।

रणमतसिंह स्वयं भी नागौद आना चाहते थे। अतः निमन्त्रण पाकर वे शीघ्रतापूर्वक नागौद की ओर चल दिये। नौगांव के विद्रोही सैनिक भी अवसर देखकर रणमतसिंह की सेना में सम्मिलित हो गये। जसो की सेना का नेतृत्व वहां के युवराज कर रहे थे। कोनी, अमकुई, कोटा, बमुरहिया आदि ग्रामों के परिहार भी अंग्रेजों से प्रसन्न नहीं थे। वे भी उनमें मिल गये। इस प्रकार रणमतसिंह ने एक बड़ी सेना एकत्र कर नागौद छावनी पर आक्रमण कर छावनी को भारी क्षति पहुँचाई। आक्रमण में जसो के राजकुमार पर्वतसिंह, कोनी, अमकुई, कोटा, बमुरहिया के ठाकुर भी सम्मिलित हुए। इसी समय बांदा के नवाब और रणमतसिंह ने अजयगढ़ के राजा रणजोरसिंह को लिखा कि वे अंग्रेजों का साथ न दे। किन्तु पन्ना और अजयगढ़ के शासक सदैव अंग्रेजों के संकट मोचक बने रहे।

1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम के समय नागौद राज्य में रहने वाली अंग्रेजी सेना में भी कुछ राष्ट्रभक्त थे और उन्होंने भी समस्त देश की तरह विद्रोह में भाग लिया। इस समय मेजर एलिस नागौद के पोलिटिकल एजेण्ट थे। उन्होंने इस विद्रोह की सूचना

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

समस्त अंग्रेज छावनियों को भेज दी। इसी समय ज्ञात हुआ कि बिहार के कुंवरसिंह, बांदा के नवाब और मनकहरी के रणमतसिंह अपनी सेना लेकर नागौद की ओर बढ़ रहे हैं। इस सूचना से घबड़ाकर मेजर एलिस अजयगढ़ की ओर चला गया। डर से नागौद से भागकर मेजर एलिस भेलसांय गांव पहुंचा। वहां के कामदार कुंवर अनन्तसिंह ने अजयगढ़ के दीवान कुंवर अर्जुनसिंह को पत्र लिखकर सूचना दी कि ''मेजर एलिस अभी रात को भेलसांय आया है।

यहां पर उसके आराम का पूरा प्रबन्ध कर दिया गया है। भयभीत एलिस को अनन्तसिंह ने धीरज बंधाया और स्वयं रातभर जागकर उसका पहरा दिया। सुबह उसके अंगरक्षक और परिवार की महिलाएं आ गयीं। तब वे अजयगढ़ राज्य की सिलगी पवाई के पवाईदार जंगी ज्योतिषी दामोदरदास के यहां चले गये। यहां पर दो दिन रूककर भेलसांय, बड़बारा और पन्ना होते हुए अजयगढ़ पहुंच गये, जहां अजयगढ़ के राजा ने उनकी भरपूर सहायता की। सिलगी के पवाईदार दमोदरदास को उनकी उत्कृष्ट सेवा के लिए कम्पनी सरकार ने विजयराघवगढ़ के पास एक जागीर प्रदान की। ज्योतिषी खानदान के अधिकार में यह जागीर जमींदारी उन्मूलन के समय तक रही।

बढ़ते तनाव के साथ कम्पनी हुकूमत के समर्थन और विरोध में भेलसांय के मैदान में दोनों ओर से द्वंद्व शुरू हुआ, रणमतसिंह का सामना करने के लिए अजयगढ़ की ओर से केसरीसिंह को सेनापति नियुक्त किया गया। अजयगढ़ की सेनाओं के पास चार तोपें थीं और भारी मात्रा में गोला–बारूद था। रणमतसिंह ने जब नागौद छावनी पर आक्रमण कर लूटपाट की, तब उन्हें वहां 8 तोपें और भारी मात्रा में गोला बारूद मिला था। किन्तु उन्होंने उसका अधिग्रहण न कर भारी भूल की, जिसका खामयाजा उन्हें भेलसांय के युद्ध में भुगतना पड़ा। तोपविहीन होने के कारण रणमतसिंह कुछ परेशान अवश्य हुए, किन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अपने भतीजे अजीतसिंह को तोपें बेकार करने के लिए भेजा। अजीत सिंह अपने अश्वराहियों के साथ अपने प्राणों की परवाह किये बिना आगे बढ़ा और तोपों के मुंह मे बांस डालकर उन्हें बेकार कर दिया। तोपें बेकार करते समय अजीतसिंह और उनके साथी खेत हो गये। बाद पारम्परिक हथियारों तलवार, भाला, बरछी, कुल्हाड़ी, फरसा और मस्कट बन्दूकों से घमासान युद्ध हुआ जिसमें रणमत सिंह प्रभावी रहें।

भेलसाय में अपने अभियान में सफल रहे रणमतसिंह अपने साथियों सहित हनुमानधारा चित्रकूट के समीप अपना शिविर लगाया जहाँ अचानक पन्ना और अजयगढ़ की सेनाओं ने अंग्रेजों के साथ रणमतसिंह को घेर लिया। इस समय रणमतसिंह अपनी पूजा–पाठ में व्यस्त थे और उनके सैनिक भोजन व्यवस्था में लगे हुए थे। इस अचानक आक्रमण से रणमतसिंह और उनके साथी चौंक गये। आकस्मिक इस आक्रमण में जो जिस हालत में था, तलवार उठाकर शत्रुओं पर टूट पड़ा। दोनों पक्षों के मध्य युद्ध हुआ।

युद्ध मे रणमतसिंह के कई सैनिक मारे गये और स्वयं रणमतसिंह भी गम्भीर रूप से घायल हो गये। इसी अवस्था में भागकर रणमतसिंह ने कोठी में शरण ली। यहां पर रणमतसिंह सुरक्षित स्थान समझकर जहाँ नौगांव की अंग्रेजी सेना ने कोठी की गढ़ी को घेर लिया। रणमतसिंह अपने साथियों सहित खखरा (रीवा) के जंगल में छिप गये। इस समय रणमतसिंह के पास रसद की कमी के चलते बिरसिंगपुर पर आक्रमण कर दिया किन्तु अंग्रेजों की सेना यहां भी उसका पीछा करते हुए आ धमकी । अतएव वे डभौरा, बरगढ़ होते हुए इलाहाबाद पहुँचे और वहाँ पर अंग्रेजी छावनी पर आक्रमण कर दिया। यहां बहुत से अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया और पर्याप्त मात्रा मे रसद सामग्री लूट ली।

कुछ समय बाद इलाहाबाद से वापस आ रणमत सिंह ने क्योंटी को अपना अड्डा बनाया। जहाँ अंग्रेजों के साथ उनका युद्ध हुआ। क्योंटी युद्ध के समय कुछ अंग्रेज पलायन करते हुए रीवा राज्य के उत्तरी भाग में छिप गये। रणमतसिंह ने उनका पीछा करते हुए बघौरा, देवरा आदि स्थानों में अंग्रेजों को पराजित कर मार भगाया। रीवा पोलिटिकल एजेण्ट आसबर्न रीवा राज्य की सेना के साथ रणमतसिंह का बराबर पीछा कर रहा था । क्योंटी गढ़ी को सुरक्षित स्थान जानकर वे यहां छिप गये। जब आसबर्न को क्योंटी में रणमतसिंह के छिपे होने का समाचार मिला, तो उसने रीवा की सेना को उस ओर भेजा। इस युद्ध में रघुराजसिंह ने कूटनीति से काम

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

लिया और क्योंटी पर अंग्रेजों के आक्रमण की पूर्व सूचना रणमतसिंह को भिजवा दी। इसके साथ ही रीवा सेना के सेनापति दलथम्भनसिंह ने रणमतसिंह पर आक्रमण का नाटक किया। अतः रणमतसिंह पूरी शक्ति से अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े, जिसमें कई अंग्रेज सैनिक और अधिकारी मारे गये। रणमतसिंह को भारी मात्रा में युद्ध सामग्री के साथ इंग्लैण्ड की एक बनी हुई तलवार भी प्राप्त हुई, जो अभी तक रणमतसिंह के वंशजों के पास विद्यमान है।

रणमतसिंह तीन वर्ष तक लगातार अंग्रेजों के खिलाफ इस अभियान में लगे रहे। अंग्रेजों के मन में उनका इतना अधिक आतंक था, कि वे उसे जल्दी से जल्दी समाप्त करना चाहते थे। किन्तु जब वे किसी प्रकार रणमतसिंह को न पकड़ पाये तब आखिरी उपाय के रूप में उन्होंने रणमतसिंह की गिरफ्तारी का भार रीवा राजा रघुराजसिंह पर डाल दिया और स्पष्ट रूप से उसे चेतावनी दे दी गई कि राज्य अथवा रणमतसिंह में से वह किसी एक का चुनाव कर ले। कम्पनी सरकार द्वारा दी गई धमकी और राज्य छिन जाने के डर से महाराजा रघुराजसिंह अत्यधिक घबरा गये। दीवान दीनबन्धु पाण्डेय ने रणमतसिंह की गिरप्तारी कराने की युक्ति बनाई।

राजनैतिक संकट को भापते हुए महाराजा रघुराजसिंह, रणमतसिंह को काका कहते थे, जिसका उन्होंने अपने पत्र में उल्लेख किया है– "काका राज्य पर बहुत बड़ी विपत्ति आयी है। अब तुम खात हो तो रीमा आय के अंचवा। एहां मा गद्दी केर कल्याण है।" अर्थात् तुम खाना भी खा रहे हो तो हाथ रीवा आकर धोना। रणमतसिंह जिस समय झांसी– डोगरी में अपने साथियों के साथ आगामी योजना के सम्बन्ध में विचार कर रहे थे, उसी समय महाराजा का पत्रवाहक वहां सन्देश लेकर पहुँचा। रणमतसिंह को रघुराजसिंह पर पूरा भरोसा था। अतः पत्र पाते ही सहामत खां के साथ रीवा आकर शंकर पुजारी के तहखाने में ठहर गये। यहां वह घोघर मोहल्ले में रहने वाली अपनी मां से मिले। मां को इस बात की जानकारी हो गई थी कि रणमतसिंह को गिरफ्तार कर लिया जायेगा। तो भी, उन्होंने स्वामिभक्त का परिचय देते हुए रघुराजसिंह द्वारा रणमतसिंह को लिखे गये पत्रों को जला दिया। दीनबन्धु अंग्रेजों को प्रसन्न करना चाहता था। उसने आसबर्न को रणमतसिंह के छिपे होने की सूचना दे दी जिससे एक बड़ी सेना ने तहखाने को घेर लिया। परिस्थिति को देखते हुए रणमतसिंह ने आत्म समर्पण कर दिया। अगस्त 1860 ई. को उसे बांदा (उ.प्र.) के भूरागढ़ किला में फांसी दे दी गई।

1857 ई. की क्रान्ति के बाद कम्पनी का शासन समाप्त कर दिया गया और भारत का शासन ब्रिटिश संसद को सौंप दिया गया। अब भारत में गवर्नर–जनरल के स्थान पर वाइसराय की नियुक्ति होने लगी जो ब्रिटिश क्राउन का प्रतिनिधि होता था । बघेलखण्ड में भी अनेक परिवर्तन हुए। जमींदारों को राजा के नियन्त्रण से मुक्त कर दिया गया। अब ब्रिटिश सरकार जागीरों को सीधे सनदें देने लगे। जागीरों में भी प्रशासन की ओर से कुछ शर्तें लगा दी गई और जिन रियासतों के शासक अवयस्क होते थे, उनकी देखरेख स्वयं ब्रिटिश सरकार करती थी। अभी तक रीवा राज्य पर ब्रिटिश सरकार का अप्रत्यक्ष नियन्त्रण था, किन्तु महाराज रघुराजसिंह ने राज्य प्रबन्ध का भार ब्रिटिश सरकार के पोलिटिकल एजेण्ट को सौंप दिया। ब्रिटिश सरकार ने इस शर्त पर राज्य शासन का उत्तरदायित्व स्वीकार कर लिया कि ''उनके प्रशासन काल के अन्तर्गत शासन की जो प्रणाली स्थापित की जाये, उसे ब्रिटिश सरकार के प्रत्यक्ष शासन हटने के बाद भी जारी रखा जायेगा।''

ब्रिटिश शासन के उद्देश्यपूर्ण नीति में बघेलखंड की राजनीति को एक नए मार्ग में चलने के लिए विवश किया जिसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका 57 की क्रांति के क्रांतिवीर कुंवर सिंह, श्यामशाह, रणमत सिंह जैसे सेनानियों की रही जिन्होंने तत्कालिक सत्ता का सम्मान करते हुए कंपनी हुकूमत को यह सोचने पर विवश किया कि बघेलखंड तत्कालिक घटनाओं से उदासीन नहीं बल्कि मर्यादित तरीके से अपने हक और अधिकारों की लड़ाई के लिए मुखर है। स्वतंत्रता संग्राम के इस दौर में इतिहास के उन विस्मृत पृष्ठों को भी नए तरीके से सोचने समझने का मार्ग प्रशस्त किया। यह पृष्ठभूमि आगे चलकर बघेलखंड में राजनैतिक चेतना के नए अध्याय का श्री

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, February 2026 Impact Factor: 8.2

गणेश किया जिसके तहत कांग्रेस, समाजवादी आंदोलन की गतिविधियाँ मुखर हुईं और तत्कालिक शासक रीवा महाराजा ने बघेलखंड के उदीयमान जन चिंतन को सहजता से संरक्षण देते हुए मध्यम मार्ग अपना राजकीय दायित्व का सतत निर्वहन किया।

InHk Ikr &

1. अग्निहोत्री, गुरुराम प्यारे, रीवा राज्य का इतिहास,
2. अग्निहोत्री, राजीव लोचन, बघेलखंड के संस्कृत काव्य
3. अग्रवाल, कन्हैया लाल, नागौद राज्य का इतिहास
4. गौड़, रामभद्र, बघेलखंड का इतिहास
5. परिहार, अभयराज सिंह, गहौरा का ऐतिहासिक अनुसंधान
6. राधेशरण, विंध्य क्षेत्र का इतिहास
7. शास्त्री, हीरानंद, द बघेल डाइजेस्टिव ऑफ रीवा
8. निजामी, ए.एच., बघेलखंड ड्यूरिंग द ग्रेट रिवीलियन जमप्राइप, खण्ड 9
9. शास्त्री, हीरानंद, फरदर नोट्स आन दि बघेल डाइनेस्टी ऑफ रीवा।